तुम कब जाओगे , अतिथि

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - दो पंक्तियों में दीजिए -

1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है ?

ज. अतिथि चार दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है।

2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही है ?

ज. कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही है।

3. पति - पत्नी में मेहमान का स्वागत कैसे किया ?

ज. पति पत्नी में मेहमान को स्नेहा भीगी मुस्कान से, गले लगाते हुए स्वागत किया।

4. दोपहर के भोजन को कौन सी गरिमा प्रदान की गई ?

ज. दोपहर के भोजन को लंच (विशेष व्यंजनों से) की गरिमा प्रदान की गई।

5. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा ?

ज. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने कहा ' मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूं। '

6. सत्कार की उष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ ?

ज. सत्कार की उष्मा समाप्त होने पर लंच ,डिनर की जगह खिचड़ी बनने लगी।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए -

1. लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था ?

ज. जब अतिथि जाए तो पति पत्नी उसे स्टेशन तक आदर से छोड़ना चाहते थे। लेखक अतिथि को भाव भीनी और सम्मान पूर्वक विदाई देना चाहते थे। लेकिन यह कामना पूरा नहीं हो पाई।

2. पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए -

(क) अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।

ज. यहां बटुआ कांपना का आशय है " आर्थिक स्थिति पर चोट।" जब लेखक मेहमान को देखा तो उसे महसूस हुआ कि खर्च बढ़ जाएगा। इसी को बटुआ कांपना कहते हैं।

(ख) अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

ज. अतिथि जब आता है तो देवता जैसा प्रतीत होता है। दूसरे दिन वह सामान्य मानव बन जाता है। कई दिन रह जाए तो राक्षस जैसा प्रतीत होता है।

(ग) लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।

ज. हर आदमी अपने घर को सुख सुविधाओं से स्वीट होम बनाना चाहता है। जब अतिथि कई दिन रह गया तो घर में असुविधाएं उत्पन्न हो जाती है। इसलिए अतिथि को आतिथ्य पाकर दूसरे दिन ही जाना चाहिए। यही इस कथन का भाव है।

(घ) मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

ज. अतिथि लेखक के घर में 4 दिनों से रह रहा है। कल पांचवा दिन होगा। कल भी अतिथि नहीं जाएगा तो लेखक की सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। लेखक अतिथि सत्कार भूलकर ' गेट आउट ' भी कह सकता है।

(ङ) एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

ज. देवता दर्शन देकर चला जाता है। अतिथि को भी देवता जैसे कुछ समय तक रह कर जाना चाहिए। नहीं तो उसका देवत्व समाप्त हो जाता है।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए -

1. कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

ज. लेखक और उसकी पत्नी अतिथि के जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। तीसरे दिन अतिथि ने कपड़े धुलवाने की इच्छा प्रकट की। तब लेखक की आभास हुआ कि अतिथि और कुछ दिन रहेगा। यह आघात अप्रत्याशित था। लेखक अतिथि को राक्षस समझने लगा। उसमें तिरस्कार और घृणा की भावनाएं उत्पन्न हो गई।

2. ' संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना '- इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ? विस्तार से लिखिए।

ज. संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना का मतलब ' संबंधों में परिवर्तन आना '। अतिथि का स्वागत प्रसन्नता पूर्वक और सौहार्द से किया गया है। लेखनी ढीली आर्थिक स्थिति में भी उसे लंच डिनर खिलाया और सिनेमा दिखाया। लेकिन अतिथि 5 दिन रुक गया तो संबंधों में परिवर्तन आने लगा। आदर सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने लगी।

3. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए ?

ज. जब अतिथि 4 दिन तक नहीं गया तो लेखक में तिरस्कार और घृणा की भावनाएं उत्पन्न हो गई। मुस्कुराहट फीकी पडकर लुप्त हो गई। सौहार्द्र बोरियत में बदल गया। मधुर संबंध कड़वे में परिवर्तन हो गए। चर्चा के विषय चुप्पी हो गये। डिनर खिचड़ी पर आ गया।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के दो - दो पर्याय लिखिए -

चाँद, जिक्र, आघात, ऊष्मा, अंतरंग |

ज. 1. चाँद = शशि - चंद्रमा
2. जिक्र = वर्णन - कथन
3. आघात = चोट - प्रहार
4. ऊष्मा = ताप - गरमाहट
5. अंतरंग = घनिष्ठ - नजदीक

2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए -

(क) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)

(ज) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।

(ख) किसी लॉण्डी पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे। (वाचक वाक्य)

(ज) क्या किसी लॉण्ड्री पर दे देने से जल्दी धुल जाएँगे ?

(ग) सत्कार की उष्मा समाप्त हो रही थी। (भविष्यत काल)

(ज) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।

(घ) इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक वाची)।

(ज) इनके कपड़े कहाँ देने हैं ?

(ङ) कब तक टिकेंगे ये ? (नकारात्मक)

(ज) ये बहुत देर तक नहीं टिकेंगे।

3. पाठ में आए इन वाक्यों में ' चुकना ' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए -

1. तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके।
2. तुम मेरी काफी मिट्टी खोद चुके।
3. आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।
4. शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।
5. तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

4. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में ' तुम ' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए |

1. लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।
2. तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।
3. तुम्हें भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी ।।
4. कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फ़िल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।
5. भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

योग्यता-विस्तार

1. अतिथि देवो भव ' उक्ति की व्याख्या करें तथा आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन करें।

ज. इस उक्ति का अर्थ है कि अतिथि देवता के समान है। यह पुराने जमाने में यह उक्ति ठीक रही है। लेकिन आधुनिक युग में यह उक्ति उचित प्रतीत नहीं होती। आज लोगों के पास अपने लिए समय नहीं है। वे अतिथियों के स्वागत-सत्कार के लिए समय कैसे निकाले ? आज के लोग कमाने, व्यापार बढ़ाने में अधिक ध्यान देने लगे हैं। इसलिए आजकल अतिथि सत्कार करने, उनको खुशी रखने का समय बिल्कुल नही है।

2. विद्यार्थी अपने घर आए अतिथियों के सत्कार का अनुभव कक्षा में सुनाएँ -

ज. पिछले हफ्ते हमारे मामा अपने परिवार के साथ घर आए थे। उस समय में मुझे वार्षिक परीक्षाएं हो रही है। मां बाप को कार्यस्थान में छुट्टी नहीं मिली। तब हम अतिथि को चाबी देकर चले गए। उनको हमारे घर में अतिथि सत्कार पूर्ण रूप से नहीं मिली।

3. अतिथि के अपेक्षा से अधिक रुक जाने पर लेखक की क्या-क्या प्रतिक्रियाएं हुईं, उन्हें क्रम से छाँटकर लिखिए -

ज.

- पहले दिन अतिथि का भव्य स्वागत किया गया है। लंच डिनर का प्रबंध किया गया है। दूसरे दिन भी अतिथि सुलभ मुस्कान लिए घर में ही बने रहे। अतिथि सत्कार चरम सीमा तक पहुंच गई।
- तीसरे दिन उसका देवत्व समाप्त हो गया वह राक्षस दिखाई देने लगा।
- चौथे दिन मुस्कान फीकी पड़ गई। बातचीत रुक गई। डिनर का स्थान खिचड़ी ने ले लिया। मन में आया कि उसे ' गेट आउट ' कह दिया जाए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

आगमन	-	आना
निस्संकोच	-	संकोचरहित, बिना संकोच के
नम्रता	-	नत होने का भाव, स्वभाव में नरमी का होना
सतत	-	निरंतर, लगातार
आतिथ्य	-	आवभगत
एस्ट्रॉनाट्स	-	अंतरिक्ष यात्री
अंतरंग	-	घनिष्ठ, गहरा
आशंका	-	खतरा, भय, डर
मेहमाननवाज़ी	-	अतिथि सत्कार
छोर	-	किनारा, सीमा
भावभीनी	-	प्रेम से ओतप्रोत

आघात	-	चोट, प्रहार
अप्रत्याशित	-	आकस्मिक, अनसोचा
मार्मिक	-	मर्मस्पर्शी
सामीप्य	-	निकटता, समीपता
औपचारिक	-	दिखावटी, रस्मी
निर्मूल	-	मूलरहित, बिना जड़ का
कोनलों	-	कोनों से
सौहार्द	-	मैत्री, हृदय की सरलता
रूपांतरित	-	जिसका रूप (आकार) बदल दिया गया हो
ऊष्मा	-	गरमी, उग्रता
संक्रमण	-	एक स्थिति या अवस्था से दूसरी में प्रवेश
गुजायमान	-	गूँजता हुआ

हमारी हिंदी
https://hamari-hindi.com